'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ५६ } वाराणसी, मंगलवार, १२ मई, १९५९ { पच्चीस रुपया वार्षिक

बहनों की सभा में

पटियाला (पंजाब) २५-४-'५९

बहनें सर्वोदय-आन्दोलन को सफल बना सकती हैं

अभी एक बहुत बड़ी सरकारी कर्मचारियों की सभा हुई, उसमें मैंने आखिर में कहा था कि कर्मचारियों की सेवा तो लोगों को मिलनी ही चाहिए, क्योंकि उनको तनख्वाह मिलती है। लेकिन साथ ही साथ वे, उनके घर में जो माताएँ, बहनें हैं, उनको भी काम करने की प्रेरणा दें। यह पटियाला शहर है। यहाँ ऐसी पढ़ी-लिखी बहनें हैं। मैं आशा करता हूँ कि वे सर्वोदय-पात्र का काम उठा लेंगी।

बापू का हृदय और बहनें

गांधी ने लोक-सेवक-संघ की आशा की थी, वैसा लोक-सेवक-संघ आप बनें, ऐसा मैं चाहता हूँ। भाइयों के झगड़े चलते हैं तो चलने दीजिये। आप कहिये कि तुम लोग तो बच्चे हो और हम हैं माताएँ। हम किसी भी पक्ष में नहीं रहेंगी। इस प्रकार का एक लोक-सेवक-संघ बनाने की प्रेरणा आपको मिले। मुझे आशा है कि आप यह काम अवश्य करेंगी। इस काम से गांधीजी की आत्मा को शांति मिलेगी। गांधीजी की बहनों पर बहुत श्रद्धा थी। उन्होंने बहनों के लिए बहुत प्रयत्न किया है कि वे सामने आयें। ऐसी कोशिश दयानंद ने भी की थी। वेदों का अध्ययन स्त्रियाँ करें, ऐसा उन्होंने कहा था और उसके लिए कोशिश भी की थी। इस जमाने में गांधीजी के कारण हजारों बहनें सामने आयीं और उन्होंने बहुत बड़े-बड़े काम किये। गांधीजी के साथ बहुत बहनों ने काम किया। उनका दिल गांधीजी के सामने खुलता था। अगर आप यह काम उठा सकेंगी तो उनकी आत्मा को तसल्ली मिलेगी।

सर्वोदय-पात्र और बहनें

आज एक बहन ने रास्ते में सवाल पूछा कि पुरुष बहनों को घर में दबा रखते हैं, इसके लिए क्या किया जाय? मैंने कहा कि बहनें सत्याग्रह करें। लेकिन आज की हालत में मेरी आवाज उनके पास कैसे पहुँचेगी? उनको तो ऐसे बन्दोबस्त में रखा जाता है, जैसे माणिक, जवाहर, रत्न संदूक में बंद करके रखे जाते हैं। इसलिए सत्याग्रह की बात आज नहीं हो सकती। उसके लिए अभी जरा देर है। आज सर्वोदय-पात्र का काम आप कर सकती हैं। रोज अपने बच्चे के हाथ से एक मुट्ठी अनाज सर्वोदय-पात्र में डालना चाहिए, जो शांति के लिए वोट होगा। पंजाब में मैंने एक विशेष बात देखी, जो महाराष्ट्र में और कर्नाटक में नहीं देखी। वहाँ बहनें खुले आम घूमती हैं, पर यहाँ की बहनें इकट्ठी होकर कीर्तन, सत्संग वगैरह करती हैं, ऐसा दृश्य वहाँ कहाँ है? ऐसे सत्संग में बहनों को आप इकट्ठा कर सकती हैं और उनके सामने हमारी बातें रख सकती हैं।

शान्ति-सेना और बहनें

गांधीजी के जमाने में शराब-बंदी के लिए दूकानों पर पिकेटिंग करने के लिए किसको भेजा जाय, यह सवाल आया था, तब गांधीजी ने कहा था कि बहनों को भेजा जाय। यह विलक्षण जवाब सुनकर लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ। लोग कहने लगे कि बदमाशों के अड्डों पर बहनों को कैसे भेजा जाय? बापू ने कहा था कि अंधेरे के सामने प्रकाश जायगा, तभी काम होगा। बहनें अगर वहाँ जायेंगी तो वे लोग शरमिन्दा हो जायेंगे। हम में से सज्जन कौन हैं? बहनें। लोगों ने यह देखा कि जहाँ-जहाँ बहनें गयीं, वहाँ-वहाँ अच्छा काम हुआ। यह गांधीजी की सूझ थी। दंगे फसाद को रोकने का काम बहनें उत्तम तरीके से कर सकती हैं। जहाँ झगड़े होते हैं, वहाँ शांति की मूर्ति खड़ी हो जाय तो झगड़ा एकदम बन्द हो जायगा। इसलिए मेरा तो पूरा विश्वास है कि शांति-सेना का का काम बहनें बहुत अच्छा कर सकती हैं।

राजा दुश्यन्त हिरण का शिकार करने के लिए गया। कण्व-ऋषि के आश्रम का एक हिरण मिला। वह उसी के पीछे दौड़ा। तब आश्रम का एक बालक राजा को रोकता है और कहता है, 'आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः।' एक ऋषिकुमार इस तरह राजा को रोकता है, और कहता है कि आश्रम के मृग की हत्या नहीं हो सकती है। ऋषिकुमार के आगे एक सत्ताधीश रुक जाता है। यह हिम्मत बहनें दिखा सकती हैं। दंगे में जाकर वह खड़ी हों और कहें कि बंद करो तो दंगा बंद हो जायेगा। बहनों का असर दंगा करनेवालों पर होगा। इसलिए शान्ति की शक्ति बहनों में है।

पक्षमुक्ति और बहनें

सर्वोदय-पात्र हर घर में रखा जाता है तो एक ताकत निर्माण

होती है। आपके सत्संग में ये बातें आप बहनों को बताइये, घर-घर जाकर बहनों को समझाइये कि हमें शांति के लिए घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखना है। पक्ष-मुक्त होकर लोक-सेवक-संघ बनाना है और सबकी सेवा समान भाव से करनी है। किसी तरफ कोई भेद हम नहीं करते हैं। इन्सान के नाते इन्सान की सेवा करेंगे,

प्रार्थना-प्रवचन

भलाई की आवाज उठायेंगे। जहाँ-जहाँ बुराइयाँ हैं, उसके खिलाफ आवाज उठायेंगे, ऐसा निश्चय आप कर सकती हैं और यह काम पटियाला की बहनें उठायें। आप तो यहाँ पंजाब को बचानेवाली ताकत पैदा कर सकती हैं।

◇◇◇

पिलानी (राज०) ३०-३-'५९

हमारे आन्दोलन में बापू की आत्मा बसी हुई है

मेरे प्यारे भाइयो और बहनो! जो प्रेम का दृश्य आज मैं देख रहा हूँ, वही आठ साल से सतत देखता आया हूँ। सर्वत्र सर्वोदय-विचार पर लोगों की श्रद्धा है, इस विचार पर लोगों की जितनी श्रद्धा है, उतनी ही हमारे दिल में लोगों के लिए श्रद्धा है। हमें यह अनुभव हुआ है कि सर्वोदय-विचार भारतीय जनता के लायक है। और भारतीय जनता सर्वोदय-विचार के लायक है। शिक्षितों की सभा में और अशिक्षितों की सभा में हमने फर्क नहीं देखा। जहाँ-जहाँ भी हम गये, प्रेम और श्रद्धा का स्पर्श हमें हुआ है।

आत्मज्ञान और विज्ञान का समन्वय

आज हम जिस संस्था में आये हैं, वह संस्था भारत का विद्यापीठ बनने जा रही है। अभी मुझे यहाँ शारदा-मंदिर दिखाने के लिए ले गये। भगवान शंकर ने अपनी भक्ति के लिए शारदा माता की स्थापना की थी। वे अद्वैत समझाते थे। घट-घट में विराजमान है, उसी को वे मानते थे। लेकिन फिर भी शिष्यों के सामने एक संकेत चाहिए था, इसीलिए उन्होंने शारदा की स्थापना की। यहाँ भी शारदा माता की स्थापना करने जा रहे हैं, इससे हम मन में सोच रहे थे कि यह स्थान भी अध्यात्मविद्या और विज्ञान का समन्वय करनेवाला स्थान बनेगा। जैसे शंकराचार्य ने अध्यात्म-विद्यापीठ शुरू किया था, वैसे ही यहाँ भी लड़कों को अध्यात्म-विद्या दी जायगी और साथ-साथ आज के जमाने का विज्ञान भी लड़कों को सिखाया जायगा।

नयी क्रान्ति का उदय

आप लोग जानते हैं कि हम एक धर्म-विचार लेकर भारत में घूम रहे हैं। जब इसका आरम्भ हुआ, तब किसी को यह कल्पना नहीं थी कि यह काम इतना व्यापक हो जायगा। हैदराबाद स्टेट के एक छोटे से गाँव में ऐसी ही हमारी सभा हो रही थी। उसमें हरिजन भाई उपस्थित थे। उस समय हम गाँव-गाँव में, घर-घर में घूमते थे। लोगों के सुख-दुख पूछते। उस सभा में गरीब हरिजनों ने हमारे सामने माँग रखी कि हमें ८० एकड़ जमीन मिलेगी तो उस पर हम गुजारा कर सकेंगे। हम मन में सोचने लगे कि शायद सरकार की जमीन हमें मिल सकती है। लेकिन फिर सोचा कि गाँववालों से कहना चाहिए और पूछना चाहिए, इसीलिए हमने सहज ही गाँववालों के सामने हरिजनों की माँग रखी। हमने कहा कि हरिजनों को इतनी जमीन मिलनी चाहिए और उनका हक है। परन्तु लोगों के दिल में करुणा है, वह प्रकट होनी चाहिए। और वही महत्त्व की चीज नहीं है, उससे न सिर्फ जीवन का, पर दूसरे मसले का भी हल निकल सकेगा। गाँव के लोगों ने हमारी बातें ध्यानपूर्वक सुनी। उस समय एक भाई सामने आये और उन्होंने सौ एकड़ जमीन देने का कबूल कर लिया।

अन्तरशक्ति का चमत्कार

हम दुनिया में घूमते हैं तो मनुष्य को स्थूल दृष्टि से नहीं देखते। इस आकार को हम भगवान के रूप के तौर पर देखते हैं। इसलिए जब वह जमीन का दान जाहिर हुआ तो हमें लगा कि इसमें भगवान का इशारा है। उस रात हम सो नहीं सके। मन में बहुत विचार उठे। चिन्तन-चक्र शुरू हुआ। कुछ निर्णय नहीं हो सकता था। अन्तःकरण में यह सवाल उठा कि आज की घटना में ईश्वर का इशारा समझ कर क्या इस काम को उठा लें? श्रद्धा और भक्ति की कसौटी करें? या यह एक आकस्मिक घटना हुई है, ऐसा समझ कर यात्रा आगे चलायें? अन्तर्मुख होकर देखा तो लगा कि अन्दर कुछ बातचीत चल रही थी। मानो जैसे दो मनुष्य आमने-सामने बैठकर बात करते हों, उसी तरह की बात! सामने बैठनेवाला कह रहा था कि इस वक्त झिझक करने की जरूरत नहीं है, श्रद्धा रखकर तू अगर काम उठायेगा तो तेरा भला है और अगर ऐसी श्रद्धा नहीं रख सकता है तो तुझे अहिंसा पर श्रद्धा रखने का भी हक नहीं है। जब यह स्पष्ट आदेश मिला तो हमने कह दिया कि यह काम हमें उठाना है।

मैं रहा गणितज्ञ। गणित पर मेरी बहुत श्रद्धा है। मेरी श्रद्धा का प्रथम स्थान परमेश्वर है और दूसरा गणित। मैंने गणित किया तो मालूम हुआ कि सारे हिन्दुस्तान की भूमि-समस्या हल करने के लिए पाँच करोड़ एकड़ जमीन की जरूरत है। बस, उसी रोज मैंने यह काम उठा लिया। परन्तु जैसे कि मैंने कहा, उस अन्दर के शब्द को मैं टाल नहीं सका। यह शब्द आठ साल से मुझे घुमा रहा है। उसकी प्रेरणा है, वह आगे-पीछे, ऊपर-नीचे सर्वत्र मौजूद है।

दूसरे दिन का किस्सा सुनाऊँ आपको? हमारी पदयात्रा चल रही थी। बीच में एक गाँव आया। वहाँ नाश्ते का इन्तजाम किया गया था। मैंने गाँववालों से पूछा कि मुझे नाश्ता क्या दोगे? गरीबों के लिए जमीन दो तो वह मेरे लिए नाश्ता हो जायगा। नाश्ते में मुझे जमीन चाहिए। उसी समय एक भाई सामने आये और कहने लगे कि मैं पचीस एकड़ जमीन देता हूँ। पहले दिन जो हुआ, उसमें जो ईश्वर का इशारा था, वह अगर न पहचाना होता तो दूसरे दिन का यह दृश्य देखने को नहीं मिलता। इस तरह मुझे अनुभव आता गया और मेरी यात्रा जारी रही। मैं माँगता गया और धीरे-धीरे ६ लाख दाताओं ने करीब-करीब पचास लाख एकड़ जमीन दी।

आखिर कब तक राह देखते रहेंगे?

एक भाई ने सवाल पूछा कि जब तुम्हारा काम प्रेम से हो

रहा है, तब कांग्रेस के प्रस्ताव की और सीलिंग की क्या जरूरत थी ? सच तो यह है कि अब प्रश्न करने के बजाय हरएक को सोचना चाहिए कि क्या मेरे पास जो जमीन है, उस पर मेरी आसक्ति है ? यह जो जमीन दान में दी जा रही है, उसमें हमें शामिल होना चाहिए या नहीं ? आठ साल से लगातार यह काम हो रहा है। तो जमीन, संपत्ति आदि कुछ भी देने के लिए हम सामने क्यों नहीं आयें ? कालपुरुष कब तक राह देखेगा ? यह भी एक सवाल है। हमने हमारा कर्त्तव्य किया है या नहीं ? जो मालिक हैं, वे इस बात पर सोचें। विज्ञान के जमाने में क्या लोग राह देखते रहेंगे ? अनन्त काल राह देखेंगे ? यह असम्भव है। यह नहीं बन सकता है। आपके देखते-देखते उधर पाकिस्तान में अयूबखान आया और वहाँ की जमीन का होल्डिंग बाहर आने लगा। आपने देखा कि वहां हिंसक शक्ति से काम हो रहा है। क्या करुणा में यह शक्ति नहीं है ? अहिंसा में यह शक्ति नहीं है ? अहिंसा में इशारे से काम होना चाहिए। आज भीति ने यह साबित कर दिया है कि मौके पर हम लोगों से काम करा सकते हैं। क्या हम लोग प्रीति में वह ताकत नहीं ला सकते हैं ? इसका उत्तर आपको और हमें भगवान के सामने देना होगा।

एक शख्स आठ साल से घूम रहा है और आप देख रहे हैं। क्या आपका दिल खुला ? नहीं तो इतिहास यह लिखेगा कि हिन्दुस्तान में भूमि-क्रान्ति होने जा रही थी, किन्तु इस आन्दोलन ने उसे रोका है। यह कालपुरुष की माँग इस आन्दोलन में प्रकट हो रही है। यह एक अहिंसक क्रान्ति है। किन्तु आप इसे नहीं पहचान रहे हैं।

मुझे ईसाई लोगों का एक गीत याद आता है। जब ईसा मसीह को फाँसी पर लटकाया गया, तब कुछ बहनें वहाँ रहीं और बाकी सभी लोग भाग गये। वह गीत है—

Were you there, were you there
When my lord was crusified ?

क्या आप हाजिर थे, जब ईसा को सूली पर चढ़ाया गया था ? ठीक यही हालत दिल्ली में हुई। गांधीजी पर गोली दाग दी गयी, वे हम सबको छोड़कर चले गये।

बापू के बाद हमने क्या किया ?

गांधीजी ने आशा रखी थी कि हिंदुस्तान के मालिक ट्रस्टी के नाते काम करेंगे। क्या हमने वह किया ? किसी मालिक को उस काम के लिए प्रेरणा हुई ? यह आप ही सोचिये कि गांधीजी के बाद हमने क्या किया ?

अभी तक मैं शहरों को टालता था, लेकिन अहमदाबाद शहर को नहीं टाल सका। कलकत्ता, बम्बई आदि नगरों को मैंने टाला। इसलिए कि मैं आक्रमण करना नहीं चाहता हूँ। वहाँ जाकर मैं कहूँगा कि आपको कुछ सोचना चाहिए। पर इस तरह का आक्रमण करने में न मेरी शोभा है, न उनकी। मेरी अहिंसा लज्जित होगी। इसीलिए मैंने सोचा कि शहरों में जाना उचित नहीं होगा। गांधीजी का वरदहस्त मेरे सिर पर है। उनकी आज्ञा से ही मैं इस तरह घूम रहा हूँ। परन्तु मैं कभी आक्रमण नहीं करूँगा। सत्याग्रही कभी आक्रमण नहीं करता। मैं विचार पहुँचानेवाला हूँ और यही मैंने कुरान में देखा। जहाँ महम्मद साहब का चित्त चलित होता है, लोक समझते नहीं हैं तो उनको अन्दर से तड़पन होती है। वहाँ अल्ला उसको कहता है कि अरे क्या तू ने सृष्टि बनायी है ? नहीं तो तू क्यों दुःखी होता है ? तेरे पर इतनी ही जिम्मेवारी है कि तू लोगों के पास पैगाम पहुँचा दे। इससे ज्यादा जिम्मेवारी तेरे पर नहीं है। भाइयो ! मैं तो उन शास्त्रों का बन्दा हूँ। इसलिए मैंने यह उचित नहीं समझा कि कलकत्ते जाऊँ और दरवाजे पर खड़ा रहकर खटखटाऊँ। अहमदाबाद तो मुझे जाना पड़ा। वहाँ मैंने क्या देखा ? लोगों ने बहुत प्रेम बरसाया। तीन लाख लोग आये थे। रविशंकर महाराज ने कहा कि तीस साल में पहली ही बार इतनी बड़ी तादाद में लोग आये और ऐसी शान्त सभा हुई। नदी का सारा विस्तार भरा हुआ था और जब मौन जाहिर हुआ तो पांच मिनट तीन लाख लोगों ने अत्यन्त शान्ति से मौन का पालन किया। जनता का कितना प्रेम था ! भिन्न-भिन्न पक्ष के लोग आये थे। वहाँ महागुजरात का सत्याग्रह चल रहा था। वह भी उन्होंने स्थगित कर दिया था। किसी तरह का विरोध नहीं रहा। सभी बड़े प्यार से आये। वहाँ बड़े-बड़े मालिकों की छोटी सी सभा भी हुई थी। उनके सामने भी बड़ी नम्रता से मैंने अपने विचार रखे थे। बाद में मैंने सुना कि इससे उनके मन पर अच्छा प्रभाव पड़ा। परन्तु कोई व्यक्ति सामने नहीं आया। उन लोगों को विचार जरूर अच्छा लगा, दिल को ठंडक भी पहुँची। पर फल कुछ नहीं ! बापू की आत्मा क्या कह रही है ? मैं तो कहता हूँकि परमेश्वर मुझे घुमा रहा है, परन्तु बापू भी मुझे घुमा रहे हैं। वे मेरे पीछे नहीं होते तो मैं नहीं घूमता। मेरा काम आश्रम में चलता। ध्यान, चिन्तन, खेती इत्यादि मेरा काम था। शास्त्रों का अध्ययन मैं करता था, अध्यापन भी करता था। वही काम आज भी जारी रहता। परन्तु आज जो मैं घूम रहा हूँ, वह बापू ही मुझे घुमा रहे हैं। परमेश्वर की कृपा से बापू के मार्ग पर चलने की मेरी कोशिश हो रही है। सन्तसमागम मुझे मिला है। उनका मेरे सिर पर वरदहस्त है।

आग नजदीक आ रही है

अभी कांग्रेस का जरा सा प्रस्ताव हुआ तो एकदम हलचल मचने लगती है कि जैसे कोई भूत आ रहा है और यहाँ तो वह जरूर आयेगा। इसी वासना और कामना से कंस भयभीत हुआ था। वह भयभीत तो था, परन्तु परम भक्त था और भागवत में लिखा है कि उसे मुक्ति हासिल हुई। भाइयो ! उसी तरह आप भयभीत रहेंगे तो कैसे चलेगा ? कम्युनिस्टों का डर है, कानून का डर है और मुझ से भी डरोगे तो निडरता का कोई स्थान आपके लिए नहीं है।

मैं अन्दर से अत्यन्त शांत हूँ और इस बात के लिए बेफिक्र हूँ कि इस आन्दोलन का परिणाम क्या आयेगा ? परन्तु जनता ऐसी राह कब तक देखेगी ? वह भूखी है। आपके चारों ओर क्या हो रहा है ? पाकिस्तान में क्या हो रहा है ? तिब्बत पर आक्रमण हुआ है। यह सब आपके नजदीक ही हो रहा है। किस तरह आप इसे टालेंगे ? ऐसी आग को टालें, यह मानवता नहीं है। इसलिए हम सुरक्षित हैं, यह मानना बिल्कुल गलत है। आग बिल्कुल हमारे नजदीक आ रही है। इसलिए अब हमें जागृत हो जाना चाहिए।

पब्लिक सेक्टर और प्राइवेट सेक्टर

इन दिनों पब्लिक सेक्टर और प्राइवेट सेक्टर का झगड़ा चलता है। कहा जाता है कि धीरे-धीरे प्राइवेट सेक्टर कम होगा और पब्लिक सेक्टर बढ़ेगा। आज तीस परसेंट पब्लिक सेक्टर है और सत्तर परसेंट प्राइवेट सेक्टर है। कल ४० प्रतिशत पब्लिक सेक्टर होगा और ६० प्रतिशत प्राइवेट सेक्टर

होगा। आगे जाकर ५० प्रतिशत पब्लिक सेक्टर और ५० प्रतिशत प्राइवेट सेक्टर होगा और होते होते प्राइवेट सेक्टर शून्य हो जायगा। पब्लिक सेक्टर सौ प्रतिशत रहेगा, यही आदर्श आ जायगा। इस तरह का एक सवाल लोगों के सामने आता है। इस पर मेरा अभिप्राय यह है कि १००+१००=१००। पब्लिक सेक्टर भी सौ प्रतिशत होना चाहिए। प्राइवेट सेक्टर भी १०० प्रतिशत होना चाहिए। यह हमारा अजीब गणित है। यह गणित यहाँ के विद्यापीठ में नहीं सिखाया जाता होगा।

आप हाथ से कितना काम करते हैं और उंगली से कितना काम करते हैं? हाथ और उंगलियों में कोई फर्क नहीं है। जितना काम आप हाथ से करते हैं, उतना ही उंगलियों से करते हैं। इसी तरह से मेरी निगाह में पब्लिक सेक्टर और प्राइवेट सेक्टर में कोई फर्क नहीं है। बशर्ते कि जैसा गांधीजी कहते थे, उस ट्रस्टीशिप पर अमल करें।

भारत दुनिया को राह दिखा सकता है

बापू की यह माँग थी कि मालिक ट्रस्टी बनें। मेरा कहना यह है कि अपनी-अपनी योजनानुसार लोक-सेवा में रत हो जायँ और अपने ही ट्रस्टी बनें। मैं ट्रस्टीशिप का कोई ढाँचा नहीं बनाना चाहता हूँ। अन्तरात्मा की साक्षी में आपकी ट्रस्टीशिप की व्याख्या के अनुसार ही आप काम कीजिये। इस काम में हिन्दुस्तान के व्यापारी, मालिक और बड़े-बड़े लोग सामने आयें तो इसमें कोई शक नहीं है कि वे हिन्दुस्तान को बचा सकते हैं और दुनिया को नयी राह दिखा सकते हैं।

आज दुनिया की निगाह हिन्दुस्तान पर है। ऐसी हालत में हमें अपने कर्तव्य के बारे में सोचना चाहिए। मैं अपनी चीज आप पर लादना नहीं चाहता हूँ। परमेश्वर से मेरी यही प्रार्थना रहती है कि मेरी न चले। मेरी कामना न चले। तेरी इच्छा रहे। इस वास्ते मेरा आग्रह नहीं है कि आप मेरे विचार को उठाइये। परन्तु मेरा यह आग्रह जरूर है कि आप इस बात पर सोचिये और आपको जैसा उचित लगे, वैसी योजना कीजिये, ताकि लोगों के मन में यह इतमीनान हो जाय कि गरीबों के लिए भी करुणा से कोई कार्य हो रहा है। आपके हृदय में करुणा जागे, यही मैं चाहता हूँ। गांधीजी के पीछे भारत की जिम्मेदारी, भारत का इन्ट्रेस्ट हम सब को ध्यान में रखना है। हम गांधीजी के साथी हैं। गांधीजी की आत्मा हमें देख रही है कि हिन्दुस्तान में मेरे साथी क्या कर रहे हैं। इतना ही खयाल आप रखिये, यही मेरे लिए बस है!

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

पटियाला (पंजाब) २५-४-'५९

मालकी मिटाने के मेरे मिशन को पंजाब में अवश्य सफलता मिलेगी

मैं एकान्तप्रिय मनुष्य हूँ। मेरी जवानी के तीस वर्ष अध्ययन, ध्यान, चिन्तन, मनन, ग्रामीणों की सेवा तथा समाधि आदि कामों में बीते हैं। अगर गान्धीजी होते तो आज भी मैं उसी काम में लगा हुआ होता। गांधीजी के जाने के बाद मेरे सभी साथियों को महसूस हुआ कि मुझे बाहर आना चाहिए। हमें भी उनकी बात ठीक लगी। तभी मैं बाहर आया। एक-डेढ़ साल तक हमने रेल, मोटर आदि के जरिये सारे देश की यात्रा की। तब हमें लगा कि अगर हमें लोक-हृदय में प्रवेश करना है तो पद-यात्रा का सर्वोत्तम तरीका अपनाना चाहिए।

मैं दिलों में पहुँचना चाहता हूँ

मैंने पदयात्रा का निश्चय कर लिया। मेरा एक स्वभाव है। परमेश्वर की ओर से मुझे जैसी प्रेरणा होती है, ठीक उसी के अनुरूप आचरण करना आरम्भ कर देता हूँ। आज तक मैंने अपने निश्चय में बाधा डालनेवाली कोई भी ताकत नहीं देखी। लगभग नौ साल से हमारी यह यात्रा बराबर चल ही रही है। इस जमाने को हवाई जहाज का जमाना कहा जाता है। हम एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव पर जाते हैं, उतनी ही देर में दुनिया के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाया जा सकता है। इस समय हमारे हाथों में नये-नये औजार आ गये हैं। इसके बावजूद हमारी पदयात्रा जारी है। वह इसलिए कि मैं लोगों के दिलों के अन्दर पहुँचना चाहता हूँ। मेरी बात आपके कानों तक पहुँचे, इतनी ही अपेक्षा नहीं है। मैं अपनी बात आपके दिलों तक पहुँचा देना चाहता हूँ।

मेरे विचार चन्द घंटों में सारी दुनिया में फैल जायँ, ऐसा हम नहीं चाहते हैं। बहुत धीरज, सब्र, शान्ति तथा धैर्यपूर्वक मैं आपके दिलों तक पहुँचने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

पंजाब में अवश्य सफलता मिलेगी

ईश्वरीय शक्ति की प्रेरणा

गौतमबुद्ध चालीस वर्ष तक घूमे। वे बिहार और उत्तर प्रदेश के दस-पाँच जिलों में लगातार घूमते रहे। वह बहुत पुराना जमाना था। वे नहीं चाहते थे कि हम कुल दुनिया में पहुँच जायँ। निकटवर्ती लोगों की सेवा करना ही उन्हें इष्ट था।

ईसामसीह सिर्फ तैंतीस साल जीये। तीस साल तक वे क्या करते रहे, इस बात का किसी को पता तक नहीं है। शायद बढ़ई का काम करते थे। आखिर के तीन साल वे घूमे। केवल पेलेस्टाईन नामक एक छोटे से मुल्क में घूमे। १९५९ साल के बाद आज भी उनका कुल दुनिया पर असर है।

आध्यात्मिक विचार लोगों के दिलों तक पहुँचता है। वहाँ से आगे मनुष्य नहीं फैलाता। अगर वह विचार सही है तो फिर परमेश्वर ही फैलाता है। हम सारी दुनिया को वश में कर लें, पर स्वयं परमेश्वर की शरण में न जायें, उसकी हम पर कृपा न हो तो 'बात न पूछे कोई' वाली हालत हो जाती है। इसलिए हम परमेश्वर के बन्दे बनकर उसका संदेश पहुँचानेवाले एक निमित्तमात्र बन जायँ। हम दुनिया का उद्धार करनेवाले हैं, ऐसा अहंकार न रखें। हम होते कौन हैं—जो उसकी इच्छा के बिना काम कर लें। परमेश्वर विचार फैलाता है। हम उसका हुक्म पाकर काम करते हैं। जो उसका हुक्म पाकर काम में लगते हैं, उनका सर्वत्र असर होता है। चाहे वे थोड़े ही समय काम क्यों न करें, उसका एक परिणाम आता है।

एक भाई मुझसे पूछते थे कि आपका पैदल चलना तो ठीक है, परन्तु पड़ाव पर पहुँच जाने के बाद किसी स्थानविशेष को देखने के लिए मोटर से चला जाय तो क्या हर्ज है? मैंने कहा कि यह मोह मुझे छोड़ देना चाहिए। मैं भगवान के हाथ में हूँ।

वह जैसे नचायेगा, मैं वैसे नाचूंगा। इधर-उधर दौड़-धूप करने में मेरा विश्वास नहीं है। मेरा उसकी इच्छा के साथ सम्बन्ध जुड़ गया है। इसलिए मैं विश्वास के साथ घूमता हूँ और लोगों के सामने अपने विचार प्रस्तुत करता हूँ।

पंजाब मेरा मातृस्थान है

आप समझ नहीं सकते कि पंजाब पर मेरा कितना प्यार है। आप पंजाब में रहते हैं, इसलिए आपका प्यार उस कोटि का नहीं है, जिस कोटी का मेरा प्यार है। आपकी संयोग-भक्ति चलती है, मेरी वियोग-भक्ति। संयोग में जितना प्यार होता है, उससे ज्यादा प्यार वियोग में होता है। जो बच्चा माँ से बिछड़ा है, उसकी माँ ज्यादा फिक्र करती है, बनिस्बत माँ से जुड़े हुए बच्चे के। मैं पंजाब से दूर था, लेकिन कई बरस पहले मैंने नक्शे में व्यास और सतलज के संगम-स्थान को देख लिया था, जिसका जिक्र ऋग्वेद में है। 'विश्वामित्र भारतीयों को लेकर नदीपार करना चाहते हैं, नदी में बाढ़ आयी है, इसलिए विश्वामित्र नदी से प्रार्थना करते हैं कि मेरी माँ, तू मेरे लिए रुक जा और मुझे रास्ता दे। नदी जवाब देती है कि जैसे माँ बच्चे के लिए झुक जाती है या जैसे कन्या पिता की सेवा के लिए झुक जाती है, वैसे ही मैं तेरे लिए झुक जाती हूँ। नदी झुक गयी और विश्वामित्र नदी पार चले गये।' जब से मैंने यह सूक्त पढ़ा था, तब से मेरे मन में यह बात आयी कि इतना पुराना स्थान हिन्दुस्तान में दूसरा कोई नहीं हो सकता। काशी और कुरुक्षेत्र भी पुराने स्थान हैं, लेकिन उनका जिक्र वेदों में नहीं है। पंजाब के इस स्थान का जिक्र वेदों में आता है, इसलिए पंजाब को मैंने मातृस्थान माना है। बचपन से मेरा इसके साथ सम्बन्ध है। क्योंकि मेरा वेद का अध्ययन सतत चलता ही है। यह हमारे पूर्वजों का निवासस्थान है। यहीं वेद, उपनिषद्, गीता, गुरु-ग्रन्थ साहब आदि पैदा हुए हैं। मैं चाहता हूँ कि इस भूमि से एक जमाने में दुनिया को प्रकाश मिला था, वह भूमि फिर से प्रकाशमय हो और दुनिया को प्रकाश दे।

पंजाब का मिलापी जीवन

यहाँ पर जो झगड़े दीखते हैं, वे सब ऊपर-ऊपर के हैं। जैसे समुद्र के ऊपरी स्तर पर हवा के कारण तरंगें पैदा होती हैं, लेकिन गहराई में शांति होती है, वैसे ही यहाँ जो झगड़े हैं, वे ऊपर-ऊपर के हैं, अन्दर गोता लगाने से रत्न, जवाहर, माणिक मिलनेवाले हैं। पंजाब के अन्तःस्थल की गहराई में जायँगे तो वहाँ एक मिली-जुली सभ्यता दिखाई देगी। पुराने जमाने में हिन्दुस्तान को दुनिया के साथ जोड़नेवाला प्रदेश पंजाब था। जब मानव को समुद्र में घूमने की ताकत हासिल नहीं थी। तब पंजाब के जरिये ही हमारा सारी दुनिया से संबंध था। पंजाब याने पाँच मानव-वंशो को जोड़नेवाली कड़ी। दुनिया में जो पाँचों प्रकार की प्रजा हैं, उन्हें जोड़ने की हैसियत पंजाब को हासिल थी। जहाँ भिन्न-भिन्न कौमें आती हैं, वहाँ कुछ कशमकश चलती है। लेकिन फिर भी यहाँ की तहजीब, संस्कृति मिली-जुली है। इस प्रदेश का संबंध ग्रीकों के साथ भी आया था। हिंदुस्तान की संस्कृति का ग्रीक संस्कृति के साथ मेल-जोल करानेवाला प्रदेश पंजाब ही था। इस मिलापी जमीन में फिर से एक दफा मेलजोल हो और यहाँ से फिर से सबको प्रकाश मिले, यह तमन्ना लेकर मैं यहाँ आया हूँ।

आपके आक्षेप : मेरा जवाब

मैं जमीन बाँटने का काम लेकर आया हूँ। इस काम की शुरूआत में लोग आक्षेप करते थे कि तुम जमीन के टुकड़े कर रहे हो। तब मैं उन्हें जवाब देता था कि जमीन के टुकड़े करने के लिए नहीं, बल्कि दिलों को जोड़ने के लिए मेरा अभियान चल रहा है। दिल जुड़ जायँगे, तो जमीन मजे में जोड़ी जा सकती है।

कुछ लोग यह भी आक्षेप उठाते थे कि आप गरीबी बाँट रहे हैं। मैं जबाब देता था कि अपने पास जो चीज है, वही तो हम बाटेंगे? अगर गरीबी हो तो गरीबी ही बाटेंगे। मुझे इसमें हमारा गौरव महसूस होता है कि हम गरीबी बाँट रहे हैं। गरीब होने पर भी बाँटकर खा रहे हैं। पाँच व्यक्ति के परिवार में चार के लिए पर्याप्त खाना हो तो यह नहीं कहा जाता कि चार को खिलाया जाय और एक को तब तक भूखा रखा जाय, जब तक अधिक पैदावार न हो। परिवार में जो कुछ है, सब बाँट के खाते हैं। परिवार के लिए जो कानून है, वह समाज को क्यों लागू नहीं किया जाता? इसलिए जब मुझपर इल्जाम लगाया जाता था कि आप गरीबी बाँट रहे हैं तो मुझे गौरव ही महसूस होता था। इस आन्दोलन में बड़ों ने जितना दिया है, उससे बहुत ज्यादा गरीबों ने दिया है।

महाजनो येन गतः स पन्थाः

मेरे इस दावे के लिए आप मुझे क्षमा करें, लेकिन मैं मानता हूँ कि आपके गुरुओं ने जो राह दिखायी है, उसी पर मैं चल रहा हूँ। सिखों में बाँटकर खाने की बात कही गयी है। मलबार में वहाँ के मुसलमानों ने मुझे मान-पत्र देते हुए कहा था कि आप जो काम कर रहे हैं वह इस्लाम की नसीहत का ही काम है। मैंने कहा कि मुझे मंजूर है। जब मैं सारनाथ गया तो वहाँ के बौद्ध भिक्षुओं ने कहा था कि जो धर्मचक्रप्रवर्तन का काम भगवान बुद्ध ने चलाया था, उसे आप आगे बढ़ा रहे हैं। मैंने उनसे कहा कि आपकी बात मुझे मंजूर है। केरल के चारों चर्चों ने प्रस्ताव किया था कि विनोबा ईसा-मसीह की राह पर चल रहा है, इसलिए उसके काम में मदद देना हर ईसाई का फर्ज है। ईसा-मसीह ने कहा था कि पड़ोसी पर वैसा और उतना प्यार करो जैसा और जितना तुम अपने पर करते हो। यह तो एक धर्म-सिद्धान्त हो गया जो आत्मा की व्यापकता को पहचानेगा, वही उसे मानेगा। मेरे कहने का मतलब यह है कि इस आन्दोलन में जो काम हुआ है, वह सब को जोड़ने का काम है और सब धर्मवाले कहते हैं कि यह हमारा काम है, इसे हम मंजूर करते हैं।

मालकी मिटाना ही मेरा मिशन है

परसों हमारी लड़की पूछ रही थी कि पंजाब में आने के बाद आपकी जबान में ज्यादा ताकत आयी है, इसका क्या कारण है? दूसरे प्रांतों की तरह यहाँ ग्रामदान नहीं मिले, फिर भी मेरी वाणी में ताकत आयी है, यह बात सही है। यहाँ गहराई में कुछ चीजें पड़ी है। उन छिपी हुई ताकतों को मैं बाहर लाना चाहता हूँ। इसलिए मेरा विश्वास है कि यहाँ खूब काम होगा। यहाँ पर मुझे एक नया शब्द मिल गया है "सांझीवालता"। मुझे किसी ने कहा कि ग्रामदान में आपने कुछ नया नहीं चलाया वह सांझीवालता की ही बात है। मास्टर तारासिंह ने मुझसे कहा कि 'आपने गुरुओं का काम किया है। हमारे पंथ में तीन बातें हैं। नाम-सुमिरन, सत्संग और बाँट के खाना। लेकिन आजकल मालकियत बनी हुई है।' मैंने उनसे कहा कि आप की बात सही है। लेकिन उस मालकियत को मिटाने के लिए ही मैं आया हूँ। मैं मानता हूँ कि वह मेरी जिंदगी का मिशन है। मैं इस लिए पैदा हुआ हूँ कि जमीन की मालकियत मिटायी जाय। मैं मानता हूँ कि जमीन की मालकियत पाप है—अधर्म है। जमीन भगवान की दी हुई चीज है, उसके हम सेवक ही हो सकते हैं।

मालकियत का दावा करना पाप है। यह कोई आर्थिक या सामाजिक निगाह से मैं नहीं कह रहा हूँ, बल्कि आध्यात्मिक, अखलाकी दृष्टि से कह रहा हूँ।

मैं पंजाब में यही बात लेकर आया हूँ। आज पंजाब याने झगड़ों का एक संग्रहालय बन गया है। फिर भी मेरा विश्वास है कि यहाँ की गहराई में एक चीज पड़ी है, वह है ब्रह्म-विद्या। याने हम सारे एक ही रूप हैं।

कल एक भाई पूछते थे कि असंख्य आत्माएँ पैदा हुईं, वे कहाँ गयीं? मैंने कहा कि आत्मा असंख्य नहीं होतीं। आत्मतत्त्व एक ही है। यह आत्म-तत्त्व की एकता पंजाब की अपनी चीज है, जो पंजाब से दुनिया को मिली है। मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि मेरे जो विचार हैं, वे आपकी गहराई में पड़े हैं। वे आपके भी हैं। अगर मैं आपको इसका भान करा दूँ तो मेरा काम हो जायेगा।

◆◆◆

सर्व-सेवा-संघ की बैठक में

राजपुरा (पंजाब) २८-४-'५९

सर्व-सेवा-संघ को व्यापक और नयी तालीम को शीघ्र कार्यान्वित कर राष्ट्र की अपेक्षाओं को पूरा करें

खुशी की बात है कि सर्व-सेवा-संघ व्यापक बनने जा रहा है। सर्वोदयवालों की एक छोटी सी जमात है। इसके बावजूद हमारे लिए हिन्दुस्तान में और कुछ मात्रा में दूसरे देशों में भी एक आशा उत्पन्न हुई है। विदेशों के साथ मेरा कोई खास सम्बन्ध नहीं है। फिर भी विदेशी लोग हमारी यात्रा में आते हैं, उनके साथ चर्चाएँ होती हैं तो पता चलता है कि उनके दिलों में भी हमारे लिए कुछ न कुछ अपेक्षा निर्माण हुई है। हमने कोई खास काम किया है, इसलिए उनकी अपेक्षा नहीं बनी है, बल्कि वह अपेक्षा इसलिए है कि यहाँ एक नया रास्ता ढूँढ़ने की कोशिश हो रही है। जहाँ नया रास्ता ढूँढा जा रहा हो, उस तरफ उनका ध्यान फौरन आकर्षित होता है।

सर्व-सेवा-संघ का विधान सूक्ष्म दृष्टि से बनाया जाय

अपने देश में कई काम पंचवर्षीय योजना के जरिये किये जा रहे हैं। जो उससे नहीं किये जायेंगे वे लोगों के सहयोग से किये जायेंगे—ऐसी आशा की जाती है। यह आशा सफल भी हो सकती है। परन्तु कुछ काम ऐसे हैं, जो न पंचवर्षीय योजना से बनेंगे और न लोगों के प्रयत्न से बनेंगे। राजनैतिक पक्षों से भी नहीं बनेंगे। लेकिन शायद आप लोगों से वे काम बनें। इसीलिए येलवाल-परिषद् में मैंने कहा था कि सर्व-सेवा-संघ को इतना व्यापक हो जाना चाहिए, जितना कि कम्युनिटी प्रोजेक्ट होने जा रहा है। धीरे-धीरे हमें सारे भारत में फैल जाना है। इसी दृष्टि से आप नया संविधान बना रहे हैं। यह अच्छा है। आपका संविधान आदर्श और सबकी भलाई सोचनेवालों के लिए अनुकरणीय बने। यह एक ऐसा संविधान बनाया जाय, जिसमें कोई खास नुक्स न रह जाय। इसमें हमारी बुद्धि सूक्ष्मता से लगनी चाहिए।

विचारों की भिन्नता में भी दिल एक हो

अपने देश की गंभीर परिस्थिति को देखते हुए हमारी जमात को पूरे अर्थ में एक दिल जमात होना चाहिए। हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न विचारों की चर्चा अवश्य चले, लेकिन हमारा दिल एक हो। सरकार तथा लोगों के सामने हमारी एक ही आवाज सुनाई दे। हमारे अलग-अलग विचार हों तो उन्हें हम प्रदर्शित भी करें। किन्तु सरकार और लोगों के सामने हम कुछ ऐसी बातें रखें, जिनका फैसला एक मत से करें।

एक दिल से अब हम राष्ट्र के कुछ काम भी उठायें। शान्ति-सेना, ग्राम-स्वराज्य और नयी तालीम का काम हमारे सामने है। ग्राम-स्वराज्य का काम बहुत गहरा और व्यापक है। उस दिशा में हम कदम-ब-कदम बढ़ेंगे। अभी शान्ति-सेना और नयी तालीम का काम ऐसा है, जो शीघ्र ही हमारे हाथों से सम्पन्न होना चाहिए। कम से कम उस दिशा में हमारा पूरा प्रयत्न रहना चाहिए।

अशान्ति के कारणों को दूर करें

इस समय हिन्दुस्तान में अशान्ति है। जरा सा कारण मिलते ही वह प्रकट हो जाती है। भूपाल, सीतामढ़ी आदि में भी क्या हुआ? विद्यार्थी, भाषा, धर्म आदि कई सवाल अशान्ति के निमित्त बने हुए हैं। हम भले ही मान लें कि आर्थिक परिस्थिति सुधरते ही यह सब ठीक हो जायगा। लेकिन वैसी बात नहीं है। हिन्दुस्तान एक बहुरस देश है। इसे एकरस बनाने की कोशिश करनी है। इसलिए अशान्ति के विभिन्न कारणों को मिटाना होगा। हमारे घर में तो अशान्ति है ही। अब घर के नजदीक भी अशान्ति आ पहुँची है। चारों ओर उसके आसार दिखायी पड़ रहे हैं। पाकिस्तान में क्या हो रहा है? तिब्बत में क्या हो रहा है? पाकिस्तान और तिब्बत हिन्दुस्तान के पड़ोस में हैं। मैं किसी के मन में भय पैदा करने के लिए यह बात नहीं कह रहा हूँ। यह आज वस्तुस्थिति है। वस्तुस्थिति का असर लोगों के चित्त पर होता ही है। ऐसी परिस्थिति में आन्तरिक शान्ति के लिए मजबूत ताकत खड़ी हो सके तो देश को कुछ सान्त्वना मिल सकती है। शान्ति-सेना के जरिये कम से कम हमें इस बात को सम्पन्न करना है।

रक्षणशक्ति के बिना आर्थिक कार्यक्रम पिछड़ जायगा

कई लोगों को लगता है कि विभिन्न कार्यक्रमों से हमारा आर्थिक क्रान्ति का कार्यक्रम पिछड़ जायगा। लेकिन यह शंका करना एकदम गलत बात है। मैं कहना चाहता हूँ कि अगर हम शीघ्र ही शान्ति-सेना का काम नहीं करते तो हमारा आर्थिक क्रान्ति का विचार जरूर पीछे ढकेल दिया जायगा। देश में अब ऐसी परिस्थिति पैदा हो सकती है, जिसमें आपको काम करने के लिए अनुकूल वातावरण नहीं मिलेगा और लोग आपकी बात भी नहीं सुनेंगे। हिंसक क्रांति करनेवाले लोग ऐसी हालत को क्रान्ति के लिए अनुकूल समझते हैं। वे मानते हैं कि क्रान्ति कोलाहल में ही हो सकती है। वे ऐसी हालत की चिन्ता नहीं करते। हमारे चारों ओर इतनी अशान्ति पहुँचने के बाद हम अहिंसात्मक तरीकों से शान्ति-स्थापना का प्रयत्न नहीं करेंगे तो हमारी क्रान्ति की बात सुनने के लिए श्रोताओं का मिलना भी दुर्लभ हो जायगा। 'तालीम पर सरकार की सत्ता नहीं चलनी चाहिए।

सेना पर खर्च नहीं किया जाना चाहिए। ५५ लाख सरकारी नौकर हमारे देश के लिए बोझ हैं।' ये सारी बातें हम बोलते ही चले जायँ। लेकिन हमारा कोई सुननेवाला न मिलेगा। संकटकालीन स्थिति में हमें समझदार समझकर हमारी बातें सुनने जैसी हालत नहीं रहेगी। इसलिए आज देश में जो आवश्यकता पैदा हुई है, उसकी पूर्ति हमें करनी चाहिए। अगर इस आवश्यकता की पूर्ति नहीं करेंगे तो 'वेट ऍन्ड फाउन्ड वेटिंग' जैसी हालत हो जायगी। तब क्या हम आर्थिक क्रान्ति के विचार बोलने लायक रह सकेंगे? हमारा विचार कौन सुनेगा? फिर हमें कोई खानगी धंधा करना होगा—याने उस हालत में हम सार्वजनिक काम करने की स्थिति में नहीं रह जायेंगे। इसीलिए अभी ही हमें शान्ति-सेना के काम को उठाना होगा।

पुरानी तालीम का खतरा

नयी तालीम के बारे में भी अब जल्दी ही फैसला होना चाहिए। यह पुरानी तालीम कब तक चलती रहेगी? मैंने अखबार में पढ़ा कि इस साल पंजाब में १ फी सदी लोग परीक्षा में बैठे। सारे भारत की यही हालत होगी। इतने लोग शिक्षित होते चले जायेंगे और फिर बेकार रहेंगे तो फिर हम अपना समाज कैसे बचा सकेंगे? अभी पं० नेहरू ने अपने एक भाषण में ग्रामीणों से कहा कि ये शहर में भीड़ न करें। लेकिन वे शहर में भीड़ नहीं करेंगे तो गाँव में रहकर क्या करेंगे? वे गाँव में कोई काम नहीं कर सकते हैं, वहाँ बोझ ही बन जायेंगे। क्योंकि उनको तालीम ही वैसी मिली है। गाँववाले भी सोचते हैं कि कोई लड़का शहर चला जाय तो अच्छा ही है। शहर से घर में वह कुछ पैसा भेजेगा तो मदद होगी और नहीं भेजेगा, तब भी एक आदमी का बोझ तो कम हो जायगा। इस दृष्टि से वह अच्छा ही है। मुझे मिलीटरी का उतना खतरा नहीं मालूम होता, जितना आज की तालीम का मालूम होता है। मिलीटरी हुक्म-बरदार है। उसे हम जब चाहे, तब खत्म कर सकते हैं। लेकिन आज की यूनिवर्सिटी में जो माल तैयार हो रहा है, उसी प्रकार का माल पैदा होता रहा, तो उसमें बहुत बड़ा खतरा है। इसे हम तब तक नहीं रोक सकते हैं, जब तक हमारा कुल समाज नयी तालीम का समाज नहीं बनता है और सर्व-सेवा-संघ नयी तालीम का काम करने को तैयार नहीं हो जाता है।

तालीमी संघ की दिशा

तालिमी संघ के जरिये अब तक जो काम हुआ है, वह अभिनंदनीय है। लेकिन आज हालत ऐसी हो गयी है कि उसे सँभाल पाना तालिमी संघ के बूते के बाहर की बात है। अगर वह हमारे साथ नहीं है, और हम उसके साथ नहीं हैं तो सरकार और जनता पर असर डालना सम्भव नहीं होगा। इसलिए इसके आगे नयी तालीम का काम हम सबको एक होकर करना चाहिए। कुछ लोग तालीम के माहीर बनकर काम करें, यह नहीं होना चाहिए। अब हमें अपने कुल काम को ही नयी तालीम का रंग देना चाहिए। अब एक ऐसा मुकाम आ गया है, जब कि नयी तालीम का रूप बदलना ही होगा। यह बात तालिमी संघ ने भी मंजूर कर ली है।

आर्यनायकमजी तामिलनाड़ में हमारे साथ घूमे। उस समय हम दोनों में काफी सलाह-मशविरा हुआ। वहाँ उन्हें भू-दान, ग्रामदान का जो दर्शन हुआ, उसके परिणामस्वरूप उनके भी ध्यान में आया कि नयी तालीम के काम का जो पुराना ढाँचा था, वह अब खत्म कर नयी प्रगति करनी होगी। ग्रामदानी गाँवों को ही स्कूल मानकर नयी तालीम चलानी होगी। उन्होंने यह बात ठीक ग्रहण कर ली और तदनुसार तालिमी संघ ने प्रस्ताव भी कर लिया कि उसके आगे हमारा काम ग्रामदान-मूलक होगा। इस हालत में अब हम सबको मिलकर नयी तालीम का क्षेत्र अपना क्षेत्र है, ऐसा मानना चाहिए।

तालिमी संघ और सर्व-सेवा-संघ इन दो संस्थाओं में जो फर्क है, उसे मिटाना होगा। चार-पाँच साल पहले की बात है, चर्चा चल रही थी कि तामिली संघ सर्व-सेवा-संघ में लीन हो जाय, लेकिन सब लोगों ने तय किया कि अभी एक रूप होने की बात छोड दी जाय और इस सम्बन्ध में बाद में सोचा जाय।

अब मैं दुबारा आपके सामने यह बात रखना चाहता हूँ। चार साल पहले जो बात रखी थी, वही आज नहीं रख रहा हूँ। आज सर्व-सेवा-संघ के लिए अपेक्षा पैदा हुई है कि वह विकसित हो। उसे गवर्नमेंट के साथ पेश आना पड़ता है। इस हालत में नयी तालीम का काम पूरी तरह से प्रकाशित करने के लिए तालिमी संघ को सर्व-सेवा-संघ में मिल जाना चाहिए और सर्व-सेवा-संघ को फैसला करना चाहिए कि हमारा कुल काम नयी तालीम से नये रूप के अनुसार चलेगा। जैसे हमारा विचार-प्रचार का एक खास विभाग होगा और जैसे हम शांति-सेना की बात लोगों के सामने रखेंगे, वैसे ही नयी तालीम की भी रखेंगे। हमारे कुल स्थानों को नयी तालीम का रूप दिया जायगा।

जब भूदानमूलक, ग्रामोद्योगप्रधान, अहिंसक क्रांति का मंत्र तैयार हुआ, तब एक भाईने पूछा था कि इसमें नयी तालीम का स्थान कहाँ है? तब मैंने कहा था कि इसमें जो अहिंसक शब्द इस्तेमाल किया गया है, वही नयी तालीम है। नयी तालीम याने अहिंसा। इसलिए अब हमें यह काम शीघ्रातिशीघ्र करना होगा, जिससे कि सरकार और समाज आज की तालीम को छोड़ने के लिए राजी हो जाय और नयी तालीम का नया रूप स्वीकार करने के लिए राजी हो जाय। इस वक्त तालीमी संघ सर्व-सेवा-संघ में लीन हो जाय और सर्व-सेवा-संघ ही नयी तालीम का काम उठाये, यही बात राष्ट्र के हित में है।

देरी का अवसर नहीं

नयी तालीम-सम्मेलन में मैंने कहा था कि नयी तालीम के शिक्षक शांति-सैनिक नहीं हैं तो हैं क्या? आर्यनायकमजी ने कहा कि उन लोगों ने यह मंजूर कर लिया कि नयी तालीम को शांति-सेना का काम उठा लेना चाहिए। अब हमारे सामने ग्राम-स्वराज्य का एक ऐसा कार्यक्रम होना चाहिए, जिसमें नयी तालीम और शांति-सेना एक हो जाय। उसके लिए आज जो भिन्न-भिन्न संस्थाएँ चलती हैं, उससे देश के काम को पूरा लाभ नहीं होगा। इसलिए सर्व-सेवा-संघ को यह काम उठाना चाहिए। तभी हम सरकार पर और समाज पर असर डालने में समर्थ होंगे।

ऐसे काम में फैसला शांति से ही होना चाहिए। ऐसा चाहनेवाला व्यक्ति मैं हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि इस वक्त इसका फैसला जल्द हो जाय। मुझे अन्दर से उतावली नहीं है। परन्तु मैं जो परिस्थिति देख रहा हूँ, वह ऐसी नहीं है कि हमें ज्यादा समय मिले। अभी हमारी कश्मीर-यात्रा की बात चल रही थी तो किसी ने सुझाया कि 'हम लद्दाक जायें तो अच्छा होगा।

क्योंकि लद्दाक की सीमाएँ तिब्बत और रूस से मिली हैं। वहाँ हमारे जाने से कुछ-न-कुछ असर होगा।' मैंने कहा कि 'मुझ में क्या जादू है कि उसका असर होगा ?' लेकिन मैं चाहता हूँ कि इस वक्त लोगों में आशा पैदा हुई है, आशा का भूत पैदा हुआ है, उसे हमें नचाना होगा। इस काम में अगर हम देर लगायेंगे तो सार निकल जायगा।

शांति-सेना के बारे में मेरे मन में एक विचार चल ही रहा था। लेकिन आज जब वज्जुभाई ने उसका जिक्र किया तो मुझे खुशी हुई। मैं यह चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान के तीन सौ जिलों के जो शहर हैं, उनमें हमारा एक-एक शांति-सैनिक हो, जिसका यह जिम्मा हो कि वह शहर में शान्ति रखे। इस काम के लिए उसे अनेकों का सहयोग प्राप्त करना होगा। एक छोटी सी सेवा-सेना खड़ी करनी होगी। साहित्य-प्रचार करना होगा और सब स सहानुभूति हासिल करनी होगी हमारे पास तीन सौ व्यक्ति नहीं हैं तो कम से कम सौ शहरों में सेवक रखे जायँ। खास कर जो प्रबल स्पॉट्स हैं, वहाँ पर हमारे सेवक होने चाहिए और सर्व-सेवा-संघ को घोषित करना चाहिए कि अमुक जिले के लिए हमारा अमुक मनुष्य काम कर रहा है।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

उज्ञाना (पंजाब) १८-४-'५९

ग्रामस्वराज्य की स्थापना ही मेरी सफलता है

पंजाब की बहनों में बहुत ताकत है। यहाँ आने के बाद हमें बहुत गाँव ऐसे मिले हैं, जहाँ हर घर में सर्वोदय-पात्र रखा हुआ है। यह बहुत बड़ी बात है। वैसे सर्वोदय-पात्र बहुत छोटी चीज है। उसका बोझ हो, ऐसी वह चीज नहीं है। क्या सिख, क्या मुस्लिम, क्या जैन, क्या पारसी—सब को यह काम पसन्द है। किसी को इसका बोझ महसूस नहीं होता है। गाँव के समस्त घरों में सर्वोदय-पात्र रखा जाय, यह बहुत बड़ी बात है और पंजाब में यह हो रहा है। मेरा मानना है कि पंजाब में हमारे जो भाई काम करनेवाले हैं, वे लोगों के पास प्रेम से पहुँचेंगे, तो लोग सर्वोदय पात्र को नियमित चलायें, यह भी देखने को मिलेगा। इसमें इन्तजाम की ताकत जरूरी है। इस काम में हमारी परीक्षा, कसौटी होनेवाली है। मुझे उम्मीद है कि हमारे कार्यकर्ता इस परीक्षा में पास हो जायेंगे।

सर्वोदय का यह विचार ईश्वर का पैगाम है। नहीं तो हमारी ऐसी कोई ताकत नहीं है, जिसके बल पर सतत आठ साल तक बराबर चल पाते।

ग्रामस्वराज्य की घोषणा करें

अंग्रेजों के जमाने में हम छोटे-मोटे ग्रिविएन्सेस राज्यकर्ताओं के साम रखते थे। उससे लोगों के कुछ दुःख दूर होते थे और कुछ दूर नहीं होते थे। आखिर दादाभाई नौरोजी ने यह जाहिर किया कि हमारे ये छोटे-बड़े दुख तब तक नहीं मिटेंगे, जब तक हिन्दुस्तान में स्वराज्य नहीं आयेगा। १९०६ में दादाभाई नौरोजी ने कलकत्ता में प्रथम बार यह जाहिर किया। तब से स्वराज्य शब्द चला। १९०६ में स्वराज्य की घोषणा हुई। उसके ४२ साल बाद स्वराज्य मिला।

आजकल गाँवों में बहुत दुःख हैं। वे दुःख भी तभी मिटेंगे, जब हम ग्राम-स्वराज्य की स्थापना करेंगे। ग्राम-स्वराज्य चाहिए, यह बात जब लोग मानेंगे, तब वह होगा। देश के छोटे-छोटे गाँव गुलाम हैं, पराधीन हैं, अपना माल स्वयं तैयार नहीं करते हैं। गाँवों के लोग काम करने में इज्जत नहीं मानते हैं, काम न करने में इज्जत मानते हैं। इस तरह हम टूटे-फूटे रहेंगे तो देश का स्वराज्य भी टूटा-फूटा रहेगा। ये दुःख तब तक नहीं मिटेंगे, जब तक ग्राम-स्वराज्य की घोषणा गाँववाले नहीं करेंगे। ग्रामदान के आधार के बिना ग्राम-स्वराज्य नहीं हो सकता। मालकियत कायम रखकर ग्राम-स्वराज्य नहीं हो सकता है। इस लिए मालकियत मिटाने का उत्साह पैदा होगा, तब ग्राम-स्वराज्य होगा।

अपने पाँवों पर खड़े हों

मेरे मन में बहुत सत्र है। मैं गाँव-गाँव जाकर समझाऊँगा कि हवा, पानी के जैसी जमीन भगवान की देन है। उसका मालिक कोई नहीं हो सकता है। इसके बिना ग्रामदान नहीं होगा, ग्राम-स्वराज्य नहीं होगा, मसले हल नहीं होंगे। कल महा-युद्ध हुआ तो गाँवों को कौन बचायेगा ? अनाज के भाव चढ़ जायँगे। पिछले महायुद्ध में तीस लाख लोग भूखों मरे। आज ऐसा होगा तो दोष किसको देंगे ? उस जमाने में तो अंग्रेजों को दोष देते थे। आज किसको दोष देंगे ? इसलिए होना यह चाहिए कि गाँव-गाँव अपने पाँव पर खड़े हों, ग्राम-स्वराज्य का संकल्प करें। ग्राम-स्वराज्य की स्थापना ही मेरी सफलता है।

◆◆◆

अनुक्रम

१. बहनें सर्वोदय-आन्दोलन को सफल बना सकती हैं.
पटियाला २५ अप्रैल '५९ पृष्ठ ३८९

२. हमारे आन्दोलन में बापू की आत्मा बसी हुई है.
पिलानी ३० मार्च '५९ „ ३९०

३. मालकी मिटाने के मेरे मिशन को पंजाब में...
पटियाला २५ अप्रैल '५९ „ ३९२

४. सर्व-सेवा-संघ को व्यापक और नयी तालीम को शीघ्र...
राजपुरा २८ अप्रैल '५९ „ ३९४

५. ग्राम-स्वराज्य की स्थापना ही मेरी सफलता है.
उज्ञाना १८ अप्रैल '५९ „ ३९६

◆◆◆

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।